2404156

कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय हिन्दी साहित्य

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 05-04-25

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	15	19	05
2	06	20	05
3	06	21	06
4	06	22	
5	02	23	
6	02	24	
7	02	25	
8	02	26	
9	1½	27	
10	02	28	
11	02	29	
12	02	30	
13	02	31	
14	02	योग	79½
15	02	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	03	अंकों में	शब्दों में
17	03	80	अस्सी
18	03		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 84378

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 180/2025

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्ति
   उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त
   सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सके
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नाम
   नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनु
   साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ
   होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक
   क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉ
   उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं
   चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः प
   समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक
   1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ
   उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार
   त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड - अ
15	Q.1 (i)	(अ) भैरवी। 1
	(ii)	(स) पीली। 1
	(iii)	(ब) बेर। 1
	(iv)	(अ) 35 इंच। 1
	(v)	~~(द) (स) रघुवीर सहाय।~~ (द) प्रभाष जोशी। 1
	(vi)	(ब) घनानंद। 1
	(vii)	(द) विद्यापति। 1
	(viii)	(स) भीष्म साहनी। 1
	(ix)	(स) ठोठ्या। 1
	(x)	(ब) लोक-विश्वासों के नाम पर अंधविश्वासों पर। 1
	(xi)	(अ) पुष्पित जंगल को देखकर। 1
	(xii)	(अ) फलैशबैक। 1
	(xiii)	(ब) 48 मिनट। 1

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(xiv)	ग्रुई - एंकर। (1)
	(xv)	(ख) समाचार-पत्र। (1)
6	Q.2 (i)	रिक्त-स्थान - माधुर्य-गुण। (1)
	(ii)	च्युतसंस्कृति दोष। (1)
	(iii)	वंशस्थ छंद। (1)
	(iv)	उल्लाला। (1)
	(v)	मानवीकरण। (1)
	(vi)	विशेषोक्ति। (1)
6	Q.3 (i)	भारतीय संस्कृति और परम्परा। (1)
	(ii)	भारतीय चित्त अधीनता के रूप में न सोचकर स्वाधीनता के में सोचता है। (1)
	(iii)	अपने आप पर अपने-आप के द्वारा लगाया गया बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी (1) भारी विशेषता है।
	(iv)	भले और विवेकी लोग नये और पुराने दोनों की जाँच कर है और जो हितकर होता है उसे ग्रहण करते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(v)	जो लोग दूसरों के इशारों पर भटकते हैं, वे मूर्ख होते हैं।
1	(vi)	वेदविद्या पुराने का मोह रखती है इसलिये वह हमारा आदर्श नहीं बन सकती।
6	Q.4 (i)	• मृत्यु का बोध। 1
1	(ii)	कपसि व्योम (आकाश) से उतर रही है।
1	(iii)	कपसि के केश सुनहरे, फैले हुए, ~~रुखे, कलाप, मौन~~ हैं।
1	(iv)	कपसि स्वयं की छाया छवि में छिपी हुई है।
1	(v)	कपसि की वाणी मौन है।
1	(vi)	पद्यांश की भाषा में अप्रस्तुत रूप से रूप का वर्णन करके मृत्यु का बोध कराया है। भाषा सहज व कठिन शब्दों से बोझिल हो गई है।

खण्ड - ब

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	Q.5	शुक्लजी के पिताजी उन्हें भारतेन्दु जी के नाटक सुनाया करते हैं। शुक्लजी के मन में भारतेन्दु जी के प्रति माधुर्य भावना और उनसे मिलने की उत्कंठा थी। उसकी बाल-बुद्धि सत्य हरिश्चंद्र नाटक के नायक 'राजा हरिश्चंद्र' और कवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र के प्रति भेद नहीं कर पाती है। उनके मन में भारतेन्दु जी से मिलने की उत्कण्ठा थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
(2)	Q.6	ये पंक्ति लेखक निर्मल वर्मा ने कही हैं। लेखक ने ऐसा उन लोगों के लिये कहा है जिन्हें औद्योगिक विकास के झंझावत के कारण अपने घरों, गाँव से हमेशा के लिये विस्थापित होना पड़ता है। ये लोग आधुनिक भारत के नये शरणार्थी हैं। लेखक ने ऐसा इसलिये कहा है क्योंकि प्राकृतिक आपदा के कारण विस्थापित हुए लोग अपने स्थानों पर आपदा टलने के बाद चले जाते हैं। लेकिन ये लोग अपने गाँव - परिवेश से हमेशा के लिये बिछुड़ जाते हैं। ये लोग देश के विभिन्न भागों में नये शरणार्थियों की तरह रहते हैं। इसलिये कवि ने उन्हें आधुनिक भारत के नये शरणार्थी कहा है।
(2)	Q.7	प्रस्तुत पंक्तियों से कवि निराला के दुःखमय जीवन की पहचान का पता चलता है। कवि निराला बताते हैं कि उन्होंने अपने जीवन अपार कष्टों को भोगा है। बचपन में मेरी माता की मृत्यु हो गई फिर पत्नी, पिता सब चल बसे। अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने मेरे हृदय को झकझोर कर दिया। मेरे जीवन में अपार दुःख है। इस दुःख के बारे में मैं क्या कहूँ जो आज इस संसार में ही नहीं है। दुःख ही मेरे जीवन की कहानी रही है। इस कथा के बारे में मैं लोगों से क्या कहूँ।
(2)	Q.8	प्रस्तुत पंक्तियों में मलिक मोहम्मद जायसी ने विरहिणी की इच्छा के बारे में बताया है। विरहिणी नागमती कहती है कि मेरा शरीर जलकर राख हो गया है। हे पवन! तुम मेरी राख को उड़ाकर मेरे पति के चरणों के पास ले जाओ। जीवित रहते हुए तो मैं मेरे पति के चरणों का स्पर्श

BSER-18/02025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

नहीं कर सकी किन्तु मृत्यु के बाद उनके चरणों का स्पर्श कर लूँगी। प्रस्तुत पंक्तियों में विरहिणी की अंत समय में अपने पति को स्पर्श करने की इच्छा प्रकट हुई है।

Q.9 सूरदास अंधा व गरीब था। भैरों ने उसकी झोंपड़ी को जलाकर उसकी जीवन भर की कमाई को चुरा लिया था। झोंपड़ी जलने पर सूरदास कहता है कि अंधापन और गरीबी ही मेरे लिए बहुत बड़ी विपत्ति थी। अब तो जीवन भर की कमाई भी नष्ट हो गई है। झोंपड़ी के जलने और उसकी रुपयों की पोटली चोरी हो जाने के कारण सूरदास ने ऐसा कहा।

Q.10 बिसनाथ की माता की तरह पशु-माताएँ भी ममत्व का सुख देती और पाती हैं। बिसनाथ की माँ उसे सुख लगने दूध पिलाती है। वह उसे कभी मारती है और कभी प्यार करती है। इसी प्रकार पशु-माताएँ भी अपनी सन्तानों को प्रेम करती हैं। बिसनाथ ने दिलशाद गार्डन के डियर पार्क में बत्तखों को अंडे को सेते देखा है। बत्तख जब अंडे देने को होती तो वे ~~जमीन~~ पानी को छोड़कर जमीन पर आ जाती है। वे अपने बच्चों की बहुत अच्छी से देखभाल करती है। अतः पशु-माताएँ भी ममत्व का सुख देती हैं और पाती हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

Q.11 जब अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराया जाता है, तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। उदाहरण —

"माली आवत देखिके, कलियन करे पुकार।
फुले-फुले चुन लिये, काल्हि हमारी बार॥"

यहाँ पर माली, कलियन, फुल का प्रयोग करके काल, युवा वृद्धजनों का बोध कराया गया है।
आशय यह है कि माली को आते देखकर कलियाँ कहती है कि फुल माली ने चुन लिये हैं कल हमारी बारी है। इसका भिन्न अर्थ यह है कि काल जब आता है तो वह वृद्धजनों को उठा लेता है और युवक कहते हैं कि कल हमारी बारी है।

Q.12 पत्रकार को अच्छे लेखन के लिये निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये —

(i) भाषा सरल, सहज व आम बोलचाल की होनी चाहिये।
(ii) बड़े, अलंकृत शब्दावली और जटिल शब्दावली के प्रयोग से बचना चाहिये।
(iii) पत्रकार को कम शब्दों में अधिक बात बतानी चाहिये।
(iv) अखबार मजदुर वर्ग से लेकर बडे लोग पढ़ते है। अतः अखबार की भाषा आम बोलचाल की होनी चाहिये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

Q.13 कहानी के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं -

(i) कथानक
(ii) देशकाल, वातावरण
(iii) संवाद
(iv) उद्देश्य
(v) भाषा - शैली
(vi) पात्र

2

Q.14 रेडियो में अनेक खूबियाँ हैं जो उसे अन्य समाचार माध्यमों से अलग करती हैं। यह अनपढ़ लोगों के लिये उपयोगी है। अनपढ़ लोग समाचार-पत्र नहीं पढ़ सकते। वे रेडियो से समाचार आसानी से सुन सकते हैं। रेडियो से हम तुरंत घटित घटना की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। रेडियो में संवाद को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

2

Q.15 जयशंकर-प्रसाद का लेखक-परिचय

2

जयशंकर प्रसाद अत्यन्त शांत, सौम्य व गंभीर प्रकृति के कवि हैं। वे आत्मस्तुति व परनिंदा से सदैव दूर रहते हैं। मूलतः वे कवि हैं लेकिन उन्होंने कहानी, नाटक, उपन्यास आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में उच्चकोटि की रचनाओं का सृजन किया है। उनके साहित्य में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुख है। उनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित हैं-

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, राजश्री (नाटक)
कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण) (उपन्यास)
आँधी, छाया, इन्द्रजाल, आकाशदीप और प्रतिध्वनि (कहानी)
आँसु, लहर, कामायनी, कानन-कुसुम (कविताएँ)

---

3 Q.16 यह दीप अकेला कविता में कवि अज्ञेय व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने पर बल दिया है। कवि बताता है कि एक दीप स्नेह से भरा है, गर्व भरा और मदमाता है परंतु व अकेला है, दीप के अकेले रहने से उसकी शोभा नहीं बढ़ती है। यदि हम इस दीप को पंक्ति में मिला देगें तो इससे दीप का महत्व और सार्थकता बढ़ जायेगी। इसमें कवि ने दीप को मनुष्य का प्रतीत बताया है। मनुष्य सर्वगुणसम्पन्न है, सब कुछ है, सर्वशक्तिमान है किन्तु यदि वह अकेला है तो इससे न तो समाज को लाभ मिलेगा और न ही व्यक्ति की शक्तियों का उचित लाभ होगा। यदि हम एक व्यक्ति को समाज में मिला देंगे तो इससे व्यक्ति का महत्व बढ़ जायेगा और समाज मजबुत होगा। दीप का पंक्ति में विलय व्यष्टि का समष्टि में विलय के साथ ही आत्मबोध का विश्वबोध में रूपांतरण भी है।

---

3 Q.17 लेखक असगर वजाहत ने 'शेर' लघुकथा के माध्यम से व्यवस्था पर प्रहार किया है। इसमें लेखक ने शेर को व्यवस्था का प्रतीक बताया है। व्यवस्था सत्ता की होती है। ~~सत्ता व्यवस्था की हो~~ तभी तक खामोश

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

व असमर्थक प्रतीत होती हैं जब तक उसकी आज्ञा का पालन किया जाये। जब विरोध के स्वर उठते हैं तो सत्ता हिंसक हो जाती है और विरोध के स्वर को कुचलने के लिये तैयार हो जाती है। इस लघुकथा में शेर सभी जीवों को यह विश्वास दिलाता है कि उसके मुँह के अन्दर रोजगार का दफ्तर, हरी घास का मैदान है। जीव शेर की बात का विश्वास करके उसके मुँह के अन्दर चले जाते हैं। लेकिन जब लेखक शेर के मुँह में जाने से इन्कार करता है तो शेर उस पर झपट पड़ता है। शेर हिंसक जानवर होते हुए भी अहिंसक होने का दिखावा कर रहा है। इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने सुविधाभोगियों, छद्मक्रान्तिकारियों की नीतियों पर प्रहार किया है।

Q.18 सूरदास एक अंधा और गरीब भिखारी था। भैरों ने ईर्ष्यावश उसकी झोंपड़ी जला दी थी। सूरदास ने अपनी झोंपड़ी में जीवन भर की कमाई बटोरकर रखी थी। भैरों ने झोंपड़ी को जलाकर उसकी जीवन-भर की कमाई को भी नष्ट कर दिया था। यह झोंपड़ी की आग उसके सपनों की आग थी। उसने जीवनभर मेहनत करके पाँच सौ रुपये इकट्ठा किये थे। वह इन रुपयों से गया जाकर पिण्डदान करना चाहता था, मिठुआ का ब्याह करना चाहता था, तथा गाँव में एक कुआँ बनवाना चाहता था। किन्तु झोंपड़ी में आग लगने और रुपयों की पोटली के नष्ट होने से सूरदास के सारे सपनों पर पानी फिर गया था। झोंपड़ी की आग ने उसके सपनों को भी जलाकर राख कर दिया था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

Q.14

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश लेखिका 'फणीश्वरनाथ रेणु' द्वारा लिखित कहानी 'संवदिया' से लिया गया है। हरगोबिन संवदिया बड़ी बहुरिया का संवाद उनके मायके लेकर जा रहा है, ~~उसका वर्णन~~ वह बड़ी बहुरिया का संवाद उसकी माँ को सुना रहा है, इसका वर्णन है।

व्याख्या → हरगोबिन संवदिया बड़ी बहुरिया के मायके जाकर ~~संवाद~~ उसकी माँ से कहता है कि बड़ी बहुरिया ने कोई भी संवाद नहीं भेजा है। उसकी माँ कहती है कि मेरी बेटी से कहना कि वह दशहरा पर घर के काम से छुट्टी करके गंगाजी के मेले देखने आये और वहीं पर मुझसे मुलाकात कर ले। हरगोबिन बोला कि घर में तो नौकर भी नहीं हैं। सारी गृहस्थी की जिम्मेदारी बड़ी बहुरिया के ऊपर ही है। ऐसे में वह अवकाश लेकर कैसे आयेगी। बूढ़ी माता ने कहा कि मैं तो बेटे से कह रही थी कि जाकर उसे यहाँ ले आना। वहाँ पर तो अब उसका कुछ भी नहीं रहा है। पति के मृत्यु के बाद उसकी सारी जमीन चली गई। देवर उसको दयनीय अवस्था में छोड़कर शहर में जा बसे। उन्होंने उसके गहनों का बँटवारा कर लिया। वे उसकी जानकारी भी नहीं लेते हैं।

विशेष →

(i) संवदिया बड़ी बहुरिया का संवाद उसकी माँ ~~बड़ी~~ को नहीं सुनाता है। बूढ़ी माँ अपनी बेटी के प्रति चिन्ता जाहिर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

करती है।

Q.20
(ii) भाषा सरल, सहज व भावात्मक है। तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

Q.20 प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश महाकवि 'गोस्वामी तुलसीदास' द्वारा लिखित रामचरितमानस के अयोध्या कांड से लिया गया है। इसमें श्रीराम के वनवास जाने के बाद भरत पश्चाताप कर रहे हैं। वे श्रीराम के वनागमन का दोषी स्वयं को मानते हैं।

व्याख्या → चित्रकूट की सभा में भरत भाव-विह्वल होकर कहते हैं कि विधाता को भी मेरे प्रति प्रभु श्रीराम का प्रेम सहन नहीं हुआ। जो उन्होंने मेरी माता का बहाना करके मेरे और प्रभु श्रीराम के बीच अन्तर पैदा कर दिया। यह कहते हुए मुझे शोभा नहीं देता कि कौन साधु है और कौन पवित्र? इसका निर्णय तो दूसरे लोग ही करेंगे। मेरी माता नीच है और मैं साधु हूँ यह कहना करोड़ो पाप-कर्मो के समान है। अर्थात मैं किसी को भी दोष नहीं दे सकता हूँ। क्या जंगली अनाज की बाली से उत्तम धान पैदा हो सकता है? क्या काले घोंघे में से उत्तम मोती पैदा हो सकता है, अर्थात नहीं। इसी प्रकार कुमाता से जन्मा पुत्र कैसे गुणी हो सकता है। मैं स्वप्न में भी किसी को तनिक भी दोष नहीं दे सकता। अर्थात यह सब भाग्य के कारण हुआ है इसमें किसी का भी दोष नहीं है। मैंने परिणामों को समझे बिना ही माता से कटु-वचन कहकर उनके हृदय को व्यर्थ ही जलाया है। मुझे अब अच्छी तरह से पता चल गया है कि एक प्रकार से ही मेरा भला हो सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		कि गुरु वशिष्ठ मेरे गुरु है, सीता - राम मेरे स्वामी हैं इसलिये मुझे अच्छे परिणाम की आशा हैं।
		शिल्प →
	(i)	भरत श्रीराम के वनागमन का दोषी स्वयं को बताते हैं।
	(ii)	भाषा अवधी हैं, माधुर्य गुण व वियोग रस है।
	(iii)	अनुप्रास अलंकार, दृष्टान्त अलंकार, रूपक अलंकार का प्रयोग हैं।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
6	Q.21	

योग का महत्व

① प्रस्तावना → शास्त्रों में लिखा गया है कि "पहला सुख निरोगी काया" होता है। यह अटूट सत्य है कि मानव जीवन का पहला सुख निरोगी शरीर होता है। शरीर को स्वस्थ रखने में योग का विशेष महत्व है। प्रतिदिन योग अभ्यास से मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि की जा सकती है। हमारी भारतीय संस्कृति में योग को विशेष महत्व दिया गया है। भारत में ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में योग को महत्व दिया गया है। अतः योग हमारे जीवन के लिये अनिवार्य है।

② योग का मानव जीवन में महत्व → योग का मानव जीवन में विशेष महत्व है। योग हमारे जीवन को सुखमय बनाने की कुंजी है। योग के द्वारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। योग से मनुष्य का अच्छा विकास होता है। जो व्यक्ति प्रतिदिन योगाभ्यास करता है वह कभी निरोगी नहीं होता। हमारे भारत देश में बाबा रामदेव योग के देव माने जाते हैं। योग से गंभीर बिमारियाँ जैसे - कैंसर, टी.बी., ब्लड-प्रेशर, हार्ट-अटैक से निदान पाया जा सकता है। योग के महत्व को समझते हुये पूरे विश्व में अंतराष्ट्रीय योग दिवस 21 जुन को मनाया जाता है। योग में मनुष्य को रोजगार मिलता है। आजकल लोग योग-शिक्षक, योग की ट्रेनिंग देकर खुब पैसा कमाते हैं। देश के अनेक हिस्सों में योगपीठ खुले हुये हैं। जहाँ योग से लोगों का वजन कम किया जाता है और इलाज किया जाता है। योग के महत्व को समझते हुये

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्यक्ति को रोजाना योगाभ्यास करना चाहिये।

(3) योग का प्राचीन इतिहास व विकास → योग का इतिहास बहुत पुराना है। सदियों पहले से ही भारतीय संस्कृति में योग चला रहा है। पहले के बड़े-बड़े महाराजा योग करके ही बलवान हुये थे। पहले की दंतकथा के अनुसार कहा जाता है कि जब देवों के वैद्य ने कण्व ऋषि का इलाज योग के माध्यम से ही किया है। भारत की प्राचीन संस्कृति में योग को विशेष स्थान दिया गया है। अनेक ऋषि-मुनियों योग के द्वारा ध्यान, तपस्या करके अपार शक्तियाँ अर्जित की थी। योग हमारे शरीर को ही नहीं बल्कि हमारे मस्तिष्क को भी फायदा पहुँचाता है।

(4) योग के प्रकार और लाभ → प्राचीन ऋषि मुनियों ने योग के दो प्रकार बताये हैं (1) शारीरिक (2) आध्यात्मिक। शारीरिक योग के अंतर्गत एक्सरसाइज कसरत आती है। इससे शारीरिक विकास होता है। आध्यात्मिक योग में ध्यान आता है। ध्यान करने से एकाग्रता आती है। व्यक्ति का मानसिक विकास अच्छा होता है। योग अनेक प्रकार से किये जाते हैं जैसे - भुजंगासन, वृक्षासन, पद्मासन, वज्रासन आदि अनेक योग के तरीके हैं। योग से हमारे शरीर का अच्छा विकास होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

योग के अनेक लाभ हैं –

(1) योग करने से शरीर में स्फुर्ति बढ़ती हैं।

योग से शरीर मजबुत होता हैं।

(2) योग करने से व्यक्ति का मानसिक विकास होता हैं।

(3) योग से अनेक गंभीर बिमारियों को दुर किया जा सकता हैं।

(4) योग और ध्यान से शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ मनुष्य का जीवन भी सुखमय होता हैं।

(5) योग करने से मनुष्य में सकारात्मकता बढ़ती हैं।

(6) जो व्यक्ति प्रतिदिन योगाभ्यास करता हैं वह कभी निरोगी नही रहता।

अतः योग के अनेक लाभ हैं। योगाभ्यास करके हम इन लाभों को प्राप्त कर सकते हैं।

(5) उपसंहार → योग के महत्त्व को जानते हुये हमें प्रतिदिन योग करना चाहिये। योग करने के लिये लोगों को जागरूक करना चाहिये। अतः प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व हैं कि वह स्वंय योग करे और दूसरों को भी योग का महत्त्व समझाएँ।

15/4/25

BSER-18/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18th/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB 1801/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर